तिमुथियुस कैं पौलुसक पहिल पत्र

1 हम पौलुस, जे अपना सभक उद्धारकर्ता परमेश्वरक आज्ञा सँ, आ मसीह यीशु जे अपना सभक आशाक आधार छथि तिनकर आज्ञा सँ, मसीह यीशुक एक मसीह-दूत छी,

2 से विश्वासक दृष्टि सँ अपन असली पुत्र तिमुथियुस कैं ई पत्र लिखि रहल छी—

पिता परमेश्वर आ अपना सभक प्रभु, मसीह यीशु अहाँ पर कृपा आ दया करथि आ अहाँ कैं शान्ति देथि।

गलत शिक्षाक सम्बन्ध मे चेतावनी

3 जहिना मकिदुनिया प्रदेश जाइत काल हम अहाँ सँ आग्रह कयने छलहुँ, तहिना एखनो हमर आग्रह अछि जे अहाँ इफिसुसे नगर मे रहि जाउ, जाहि सँ ओहिठाम जे किछु लोक गलत शिक्षा दऽ रहल अछि तकरा सभ कैं आदेश दिऐक जे ओ सभ एहन शिक्षा देनाइ बन्द करय, 4 आ काल्पनिक दन्तकथा सभ और असंख्य वंशावली सभक चक्कर मे पड़ल नहि रहय। ओहि सँ मात्र वाद-विवाद बढ़ैत अछि, ने कि परमेश्वरक काज, जे विश्वास पर आधारित अछि। 5 हमर एहि आदेशक लक्ष्य ई अछि जे ओ प्रेम बढ़य जे शुद्ध मोन, निर्दोष विवेक आ निष्कपट विश्वास सँ उत्पन्न होइत अछि। 6 किछु लोक एहि सभ कैं छोड़ि, बाट सँ भटकि निरर्थक विवादक बात बजैत रहैत अछि। 7 ओ सभ धर्म-नियम सिखाबऽ वला गुरु बनऽ चाहैत अछि, मुदा जे बात ओ सभ कहैत अछि और जाहि विषय पर जोर दैत अछि तकरा अपने नहि बुझैत अछि।

8 अपना सभ जनैत छी जे जँ धर्म-नियमक उचित उपयोग कयल जाय, तँ ओ उत्तम वस्तु अछि। 9 एहि पर ध्यान रहय जे धर्म-नियम* धर्मी लोक सभक लेल नहि, बल्कि अपराधी और अधीन मे नहि रहऽ वला, परमेश्वरक डर नहि मानऽ वला और पापी, नास्तिक और धर्म-विरोधी, माय-बाबूक हत्या कयनिहार और खूनी, 10 परस्त्रीगमन कयनिहार और समलैंगिक सम्बन्ध रखनिहार लोक, मनुष्य कैं किनऽ-बेचऽ वला, झूठ बाजऽ वला और झूठ

1:9 वा, “कोनो नियम”

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

गवाही देबऽ वला, और ओहि सभ लोकक लेल अछि जे सभ आरो-आरो तेहन कोनो काज सभ करैत अछि जे सही सिद्धान्तक विपरीत अछि। 11सही सिद्धान्त ओ अछि जे यीशु मसीहक शुभ समाचार सँ मिलैत अछि—ओ शुभ समाचार जे परमधन्य परमेश्वरक महिमा कें प्रगट करैत अछि आ जकरा सुनयबाक काज हमरा सौंपल गेल अछि।

पौलुस पर प्रभुक कृपा

12ई काज करबाक लेल अपना सभक प्रभु, मसीह यीशु, हमरा सामर्थ्य देलनि। हम हुनका धन्यवाद दैत छियनि, जे ओ हमरा विश्वासयोग्य बुझि अपन सेवा मे नियुक्त कयलनि, 13जखन कि हम पहिने हुनकर निन्दा करैत छलहुँ, हुनकर लोक कें सतबैत छलहुँ आ खुलि कऽ हुनकर अपमान करैत छलहुँ। मुदा हमरा पर हुनकर दया भेलनि, कारण, हमरा सँ ओ सभ काज अज्ञानता आ अविश्वासक दशा मे भेल छल। 14और देखू, अपना सभक परमेश्वर हमरा पर असीम कृपा कयलनि और संगे-संग हमरा ओहि विश्वास आ प्रेम सँ भरि देलनि जे मसीह यीशु द्वारा भेटैत अछि।

15ई एक सत्य बात अछि, जकर विश्वास सभ कें करबाक चाही—मसीह यीशु संसार मे पापी सभ कें बचयबाक लेल अयलाह। और ओकरा सभ मे सँ सभ सँ बड़का पापी हम छी। 16मुदा यैह कारण छल जे हमरा पर मसीह यीशुक दया भेलनि, जाहि सँ सभ सँ बड़का पापी पर ओ अपन असीम धैर्य प्रगट करथि, और एहि तरहेँ बाद मे आबऽ वला ओहि लोक सभक लेल हम एक उदाहरण बनिएनि जे सभ हुनका पर विश्वास कऽ कऽ अनन्त जीवन पौनिहार बनताह। 17युग-युगक राजा, अविनाशी, अदृश्य और एकमात्र परमेश्वरक सम्मान और स्तुति युगानुयुग होइत रहनि। आमीन।

शुभ समाचारक नीक लड़ाइ मे लागल रहू

18यौ हमर प्रिय बालक तिमुथियुस, बितल समय मे अहाँक बारे मे जे परमेश्वरक दिस सँ सम्बाद पाओल गेल छल, तकरे अनुरूप हम अहाँ कें ई काज सौंपैत छी, जाहि सँ ओहि सम्बाद सँ प्रेरणा पाबि अहाँ सत्यताक लेल नीक लड़ाइ मे लागल रहू। 19विश्वास मे अटल रहू आ अपन विवेक कें शुद्ध राखू। एहि दूनू बात कें किछु लोक बेकार बुझि अपन विश्वास कें नष्ट कऽ लेने अछि। 20ओहि मे हुमिनयुस आ सिकन्दर अछि। ओकरा सभ कें हम शैतानक जिम्मा मे दऽ देने छी, जाहि सँ ओ सभ ई सिखय जे परमेश्वरक निन्दा नहि करबाक अछि।

सभक लेल प्रार्थना कयल जाय

2 हम सभ सँ पहिने ई अनुरोध करैत छी जे, विनती, प्रार्थना, निवेदन आ धन्यवाद सभ मनुष्यक लेल परमेश्वर लग चढ़ाओल जाय, 2राजा लोकनि और आरो सभ अधिकारीक लेल सेहो, जाहि सँ अपना सभ भक्ति और मर्यादाक संग चैन आ शान्ति सँ जीवन व्यतीत कऽ सकी। 3एहन प्रार्थना कयनाइ अपना सभक उद्धारकर्ता परमेश्वरक दृष्टि मे उत्तम बात अछि, और एहि सँ हुनका खुशी होइत छनि, 4कारण, हुनकर इच्छा ई छनि जे, सभ मनुष्य उद्धार पाबय आ सत्य कें जानय। 5किएक तँ परमेश्वर एकेटा छथि और परमेश्वर आ

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

मनुष्यक बीच मध्यस्थ सेहो एकेटा, अर्थात् मसीह यीशु, जे स्वयं मनुष्य छथि, 6और सभ मनुष्यक छुटकाराक मोल चुकयबाक लेल अपना कँ अर्पित कऽ देलनि। एहि तरहेँ मनुष्यक सम्बन्ध मे जे परमेश्वरक इच्छा छनि, ताहि कँ निश्चित कयल समय पर प्रमाणित कऽ देल गेल। 7हम एही बात कँ प्रचार करबाक लेल, आ मसीह-दूत होयबाक लेल नियुक्त कयल गेलहुँ और गैर-यहूदी सभ कँ विश्वास आ सत्यक विषय मे सिखयबाक लेल पठाओल गेलहुँ। हम सत्य कहैत छी, झूठ नहि बजैत छी।

मण्डलीक पुरुष और स्त्रीगण सभक लेल निर्देश

8एहि लेल हम चाहैत छी जे सभ ठाम पुरुष सभ, क्रोध आ विवाद मे नहि पड़ि, अपन निर्दोष हाथ ऊपर उठा कऽ प्रार्थना करथि।

9तहिना स्त्रीगण सभ सेहो अपन ओढ़न-पहिरन वला बात मे मर्यादा आ शालीनताक ध्यान राखथि। अपन श्रृंगार केशक सजावट, सोना वा मोतीक गहना और दामी-दामी वस्त्र सँ नहि, 10बल्कि भलाइक काज सभ द्वारा करथि। ई बात ओहि स्त्रीगण सभ कँ शोभा दैत छनि जे सभ अपना कँ परमेश्वरक भक्तिनि कहैत छथि।

11स्त्रीगण सभ मण्डलीक सभा मे शान्त रहि कऽ अधीनताक संग सिखथि। 12हम एहि बातक अनुमति नहि दैत छी जे स्त्रीगण सभ उपदेश देथि अथवा पुरुष पर हुकुम चलबथि; हुनका सभ कँ चुप रहबाक चाहियनि। 13कारण, पहिने आदमक सृष्टि भेलनि, आ बाद मे हव्वाक। 14दोसर बात, आदम नहि ठकयलाह, बल्कि हव्वा ठका कऽ पाप मे पड़ि गेलीह। 15मुदा तैयो जँ स्त्रीगण सभ शालीनताक संग विश्वास, प्रेम आ पवित्रता मे स्थिर रहतीह, तँ अपन मातृत्वक कर्तव्य पूरा करैत उद्धार पौतीह।

मण्डलीक जिम्मेवार लोकनिक लेल निर्देश

3ई बात एकदम सत्य अछि जे जँ केओ मण्डली मे जिम्मेवार बनबाक इच्छा करैत छथि तँ ओ एक उत्तम काज करऽ चाहैत छथि। 2तेँ ई आवश्यक अछि जे जिम्मेवार लोक निष्कलंक होथि, हुनका एकेटा स्त्री होनि, ओ संयमी, विचारवान, भद्र, अतिथि-सत्कार कयनिहार और शिक्षा देबऽ मे निपुण होथि । 3ओ शराबी नहि होथि, आ मारा-मारी करऽ वला नहि, बल्कि नम्र होथि। ओ झगड़ा कयनिहार वा धनक लोभी नहि होथि। 4ओ अपन घर-व्यवहार कँ नीक सँ चलबैत अपन बाल-बच्चा कँ कहल मे रखैत होथि, और बच्चा सभ हुनका आदर दैत होनि। 5कारण, जँ केओ अपने घर-व्यवहार कँ ठीक सँ चलाबऽ नहि जनैत अछि, तँ ओ परमेश्वरक मण्डलीक देख-रेख कोना कऽ सकत? 6मण्डलीक जिम्मेवार व्यक्ति नव विश्वासी नहि होथि, नहि तँ कतौ एना नहि होअय जे ओ घमण्ड सँ फुलि कऽ ओहिना दण्ड पयबाक भागी बनि जाथि जेना शैतान बनल। 7इहो आवश्यक अछि जे ओ बाहरी लोक, अर्थात् अविश्वासी सभक मध्य सम्मानित होथि। कतौ एना नहि भऽ जाय जे ओ अपयशक पात्र बनि शैतानक जाल मे पड़थि।

मण्डली-सेवक सभक लेल निर्देश

8तहिना मण्डली-सेवक सभ सेहो नीक चरित्रक होथि; ओ सभ दुमुहा, शराबी, वा अनुचित लाभ कमयबाक इच्छुक नहि

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

होथि। 9परमेश्वर द्वारा प्रगट कयल सत्य
जाहि पर अपना सभक विश्वास आधारित
अछि, तकरा ओ सभ शुद्ध आ निर्दोष मोन
सँ मानैत होथि। 10पहिने हुनका सभक
जाँच कयल जानि आ हुनका सभक विरोध
मे जँ कोनो बात नहि पाओल जाय, तखन
मण्डली-सेवकक रूप मे काज करथि।

11 एहि तरहेँ हुनका सभक स्त्री
लोकनि* सेहो सभ्य आचरणवाली होथि,
दोसराक निन्दा-शिकायत करऽ वाली
नहि, बल्कि संयमी और सभ बात मे
विश्वासयोग्य होथि।

12 मण्डली-सेवक सभ एकेटा स्त्रीक
पति होथि, और अपन बाल-बच्चा आ
घर-व्यवहार केँ नीक सँ चलबैत होथि।
13मण्डली-सेवक बनि जे सेवक सभ
अपन सेवाक काज ढंग सँ पूरा करैत
छथि, से सभ सम्मान पौताह आ मसीह
यीशु परक जे हुनका सभक विश्वास
छनि, ताहि विषय मे निर्भयतापूर्बक
बजबाक साहस सेहो बढ़तनि।

सत्यक रहस्य महान् अछि

14 हमरा आशा अछि जे हम जल्दी अहाँ
लग आयब, मुदा ई पत्र एहि लेल लिखैत
छी जे, 15जँ हमरा अयबा मे विलम्ब भऽ
जाय, तँ अहाँ एहि बात केँ जानि ली जे
परमेश्वरक परिवार मे लोकक चालि-चलन
केहन रहबाक चाही। परमेश्वरक परिवार
जे अछि, से जीवित परमेश्वरक मण्डलिए
अछि। वैह सत्यक खाम्ह आ न्यो अछि।

16 एहि बात मे सन्देह नहि जे, परमेश्वर
द्वारा प्रगट कयल सत्यक रहस्य महान्
अछि—

ओ मनुष्यक रूप मे प्रगट भेलाह,
पवित्र आत्मा द्वारा सत्य प्रमाणित
भेलाह,
स्वर्गदूत सभ केँ देखाइ देलथिन,
जाति-जाति सभ मे हुनकर प्रचार
भेलनि,
संसार मे हुनका पर विश्वास कयल
गेल,
ओ महिमाक संग स्वर्ग मे उठाओल
गेलाह।

बहकाबऽ वला आत्मा सभक शिक्षा सँ सावधान रहू

4 परमेश्वरक आत्मा स्पष्ट कहैत छथि
जे अन्तिम समय मे एहनो लोक सभ
होयत जे सभ बहकाबऽ वला आत्मा सभ
केँ आ दुष्टात्मा सभक शिक्षा सभ केँ मानि
कऽ विश्वास त्यागि देत। 2एहन शिक्षा
ओहन झूठ बाजऽ वला कपटी लोक द्वारा
आओत जकरा सभक विवेक धिपल लोहा
सँ दगायल जकाँ सुन्न भऽ गेल छैक। 3ओ
सभ विवाह और कोनो-कोनो खयबाक
वस्तु सभ सँ परहेज करबाक शिक्षा दैत
अछि, जखन कि परमेश्वर एहि वस्तु सभक
रचना एहि लेल कयलनि जे, सत्य केँ जानऽ
वला आ विश्वास करऽ वला सभ द्वारा ई
वस्तु सभ धन्यवादक संग ग्रहण कयल
जाय। 4परमेश्वरक सृष्टि कयल प्रत्येक
वस्तु नीक अछि। कोनो वस्तु अस्वीकार
कयल जाय जोगरक नहि होइत अछि, जँ
ओकरा धन्यवादक संग स्वीकार कयल
जाइत छैक तँ, 5कारण, ओ परमेश्वरक
कहल बात द्वारा आ प्रार्थना सँ पवित्र
ठहराओल जाइत अछि।

3:11 वा, “एहि तरहेँ मण्डली-सेविका लोकनि”

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

मसीह यीशुक असली सेवक होउ

6 ई सभ बात विश्वासी भाय सभ कें
अहाँ बुझाउ। एहि तरहें अहाँ मसीह यीशुक
असली सेवक बनल रहब—एहन सेवक
जिनकर भरण-पोषण विश्वासक सिद्धान्त
सभ सँ आ ओहि नीक शिक्षा सभ सँ भेल
होनि, जकर अहाँ पालन करैत आबि रहल
छी। **7** परमेश्वर कें अपमानित करऽ वला
निरर्थक काल्पनिक कथा-पिहानी सभ सँ
दूर रहू। तकर बदला मे परमेश्वर कें पसन्द
पड़ऽ वला भक्तिक जीवनक साधना मे
लीन रहू। **8** शारीरिक साधना सँ किछु लाभ
तँ अछि, मुदा भक्ति सँ असीमित लाभ
अछि, किएक तँ ओ जीवनक आश्वासन
दैत अछि इहलोक मे सेहो और परलोक
मे सेहो। **9** ई एक सत्य बात अछि, जकर
विश्वास सभ कें करबाक चाही। **10** एहि
कारणें अपना सभ परिश्रम करैत छी आ
संघर्ष मे लागल रहैत छी; किएक तँ अपना
सभ अपन आशा जीवित परमेश्वर पर
रखने छी, जे सम्पूर्ण मनुष्य जातिक, आ
विशेष रूप सँ विश्वासी सभक उद्धारकर्ता
छथि। **11** अहाँ अपना उपदेश मे एही बात
सभक शिक्षा और आदेश दैत रहू।

विश्वासी सभक लेल नमूना बनू

12 युवा अवस्थाक कारणें केओ अहाँ
कें तुच्छ नहि बुझओ, बरु बात-चीत,
चालि-चलन, प्रेम, विश्वास आ पवित्रता
मे विश्वासी सभक लेल अहाँ नमूना
बनू। **13** जाबत धरि हम नहि आयब,
ताबत धरि मण्डली कें धर्मशास्त्र पढ़ि
कऽ सुनाबऽ मे, विश्वासी सभ कें
उत्साहित करऽ मे, और शिक्षा देबऽ मे
लीन रहू। **14** अहाँ अपन ओहि वरदानक
उपयोग करू, जे अहाँ कें ओहि समय
मे भविष्यवाणी द्वारा देल गेल जखन
मण्डलीक देख-रेख कयनिहारक
समुदाय अहाँ पर हाथ रखलनि। **15** एहि
बात सभक ध्यान राखू आ पूर्ण रूप सँ
एहि मे लागि जाउ, जाहि सँ सभ लोक
अहाँक आत्मिक उन्नति देखि सकय।
16 अहाँ एहि बात सभ मे दृढ़ बनल रहू।
अहाँ जे करैत छी आ जे सिखबैत छी,
दूनू पर विशेष ध्यान दिअ। एहि तरहें
कयला सँ अहाँ अपनो लेल और अहाँक
शिक्षा कें सुननिहारो सभक लेल उद्धारक
कारण होयब।

मण्डली मे आचार-व्यवहार

सभक सम्बन्ध मे

5 वृद्ध पुरुष सभ कें डाँटि-डपटि कऽ
नहि, बल्कि हुनका सभ कें अपन
पिता तुल्य मानि आग्रहपूर्बक समझाउ-
बुझाउ। युवक सभ कें भाय, **2** वृद्ध
स्त्रीगण सभ कें माय, आ युवती सभ कें
बहिन मानि हुनका सभक संग एकदम
पवित्र भावना सँ व्यवहार राखू।

विधवा सभक सम्बन्ध मे

3 ओहन विधवा सभक सम्मान और
सहायता करू जे सभ वास्तव मे निःसहाय
छथि। **4** जँ कोनो विधवा कें बेटा-बेटी
वा नाति-पोता सभ अछि, तँ ओहि बेटा-
बेटी नाति-पोता सभ कें सभ सँ पहिने ई
सिखबाक चाही जे माय-बाबू, दाइ-बाबा
सभ जे हमरा सभक पालन-पोषण कयलनि,
तकरा बदला मे हुनका सभक प्रति जे हमर
कर्तव्य अछि, से हुनका सभक देख-रेख
कऽ कऽ हमरा पूरा करबाक अछि। एहन
बात सँ परमेश्वर प्रसन्न होइत छथि। **5** जे

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

विधवा वास्तव मे निःसहाय छथि, जिनका केओ देखऽ वला नहि छनि, से परमेश्वर पर भरोसा राखि राति-दिन हुनका सँ विनती करैत प्रार्थना मे लागल रहैत छथि। 6मुदा जे विधवा भोग-विलास मे लिप्त भऽ गेल अछि, से जीवित होइतो मरल अछि। 7अहाँ एहि बात सभक सम्बन्ध मे मण्डलीक लोक सभ केँ ई आज्ञा सभ दिऔक, जाहि सँ एहि क्षेत्र मे ओ सभ निन्दा सँ बाँचल रहि सकय। 8जे केओ अपन सम्बन्धी सभक आ विशेष कऽ अपने परिवारक सदस्य सभक देख-रेख नहि करैत अछि, से विश्वास त्यागि देने अछि और अविश्वासिओ सँ भ्रष्ट अछि।

9जखन ओहि विधवा सभक नाम लिखऽ लागब, जिनका सभ केँ मण्डली द्वारा मदति भेटबाक चाही, तँ मात्र ओही विधवा सभक नाम लिखब जे सभ साठि वर्ष सँ कम वयसक नहि होथि, पतिव्रता रहल होथि, 10और भलाइक काज कयनिहारिक रूप मे चिन्हल-जानल जाइत होथि, अर्थात् अपन बाल-बच्चा सभक नीक सँ पालन-पोषण कयने होथि, अतिथि सभक सत्कार कयने होथि, प्रभुक लोक सभक पयर धोने होथि, दीन-दुखी सभक सहायता कयने होथि आ सभ प्रकारक भलाइक काज मे अपना केँ समर्पित कयने होथि।

11मुदा जबान विधवा सभक नाम विधवा-सूची मे सम्मिलित नहि कयल जाय। किएक तँ यीशु मसीहक लेल जे ओकरा सभक समर्पण अछि ताहि सँ तेज जखन ओकरा सभक शारीरिक काम-वासना होमऽ लगैत छैक तँ विवाह करऽ चाहैत अछि 12और एहि तरहेँ ओ सभ अपन पहिने कयल प्रतिज्ञा केँ तोड़ि दोषी बनि जाइत अछि। 13एतबे नहि, समय बरबाद कयनाइ आ अङने-अङने घुमनाइ ओकरा सभक आदत भऽ जाइत छैक। एहि तरहेँ ओ सभ मात्र आलसिए नहि, बल्कि ओहन-ओहन बात बाजि जे नहि बजबाक चाही, महा बजक्करि, आ दोसराक काज मे टाँग अड़ौनिहारि बनि जाइत अछि। 14तेँ हम चाहैत छी जे जबान विधवा सभ विवाह करय, सन्तान उत्पन्न करय आ अपन घर-व्यवहार चलाबय, जाहि सँ विरोधी केँ मण्डलीक निन्दा करबाक अवसर नहि भेटैक, 15कारण, एखनो तँ किछु विधवा भटकि कऽ शैतानक बाट पर चलि गेल अछि।

16जँ कोनो विश्वासी स्त्रीगणक परिवार मे विधवा सभ छथि, तँ ओ हुनका सभक सहायता करथि। ओहन विधवाक भार मण्डली पर नहि राखल जाय, जाहि सँ मण्डली ताहि विधवा सभक सहायता कऽ सकय जिनका केओ नहि छनि।

मण्डलीक देख-रेख कयनिहारक सम्बन्ध मे

17मण्डली केँ ठीक प्रकार सँ देख-रेख कयनिहार अगुआ लोकनि केँ दोबर आदर-सम्मानक योग्य बुझल जानि, विशेष रूप सँ तिनका सभ केँ जे सभ वचनक प्रचारक काज आ शिक्षा देबऽ वला काज मे परिश्रम करैत छथि। 18किएक तँ धर्मशास्त्र कहैत अछि जे, “दाउन करैत बरदक मुँह मे जाबी नहि लगाउ,”* आ “मजदूर केँ मजदूरी

5:18 व्यव 25.4

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

पयबाक अधिकार छैक।"* 19देख-रेख
कयनिहार पर जँ कोनो दोष लगाओल
जाइत अछि, तँ बिनु दू-तीन गवाहक
पुष्टि सँ तकरा स्वीकार नहि करू। 20जे
सभ पाप करैत रहैत अछि, तकरा सभ केँ
सभक सामने मे डाँटू, जाहि सँ दोसरो लोक
सभ केँ पाप करऽ सँ डर लगतैक।

21 हम परमेश्वर, मसीह यीशु आ हुनकर
चुनल स्वर्गदूत सभक सामने अहाँ केँ
स्पष्ट आदेश दैत छी जे, बिना कोनो भेद-
भाव राखि एहि नियम सभक पालन करू।
पक्षपातक भाव सँ किछु नहि करू। 22बिनु
ठीक सँ विचार कयने ककरो पर तुरत हाथ
राखि मण्डलीक सेवा-काज मे नियुक्त नहि
करू। एना नहि होअय जे अनकर पापक
भागी बनी। अपना केँ पवित्र राखू।

23 आब अहाँ मात्र पानि नहि पिबू, बल्कि
पाचन-शक्तिक लेल आ बारम्बार अस्वस्थ
रहबाक कारणेँ कनेक-कनेक मदिराक
सेवन सेहो करू।

24किछु लोकक पाप प्रत्यक्ष होइत अछि
और ओ सभ न्यायिक जाँच सँ पहिनहि
दोषी प्रमाणित भऽ जाइत अछि। मुदा किछु
लोकक पाप बादे मे प्रगट होइत अछि।
25तहिना नीक काज सभ सेहो प्रत्यक्ष
देखल जाइत अछि, आ जँ ओ नहिओ प्रगट
भेल तैयो बहुत समय धरि गुप्त नहि रहि
सकत।

दासक सम्बन्ध मे

6 दासत्वक जुआ तर मे जे लोक
सभ अछि से सभ अपन मालिक
केँ पूर्ण आदरक योग्य बुझय, जाहि
सँ परमेश्वरक नाम आ अपना सभक
शिक्षाक निन्दा नहि होअय। 2जाहि दासक
मालिक प्रभु यीशु पर विश्वास कयनिहार
छथि, से एहि कारणेँ अपन मालिकक
कम आदर नहि करनि जे, ई मालिक
तँ विश्वासक दृष्टिएँ हमर भाये अछि,
बल्कि ओहि मालिक केँ आओर बढ़ियाँ
सँ सेवा करनि, कारण, जाहि आदमी केँ
ओकर सेवा सँ लाभ भऽ रहल अछि, से
विश्वासी आ ओकर प्रिय भाय छथि।

अहाँ विश्वासी सभ केँ एहि बात सभक
शिक्षा दैत रहिऔक, आ ओकरा सभ
सँ आग्रह करैत रहू जे एहि आज्ञा सभक
पालन करओ।

धनक मोह

3 एहि सिद्धान्त सभ सँ हटि कऽ जँ केओ
कोनो आन शिक्षा दैत अछि आ अपना
सभक प्रभु यीशु मसीहक सत्य सिद्धान्त
सभ केँ नहि मानैत अछि और ओहि शिक्षा
सँ सहमत नहि अछि जे असली भक्ति
उत्पन्न करैत अछि, 4तँ ओ अहंकारी आ
अज्ञानी अछि। ओकरा झगड़ा करबाक
आ शब्द सभक विषय मे निरर्थक वाद-
विवाद करबाक रोग लागल छैक। एहि
प्रकारक वाद-विवाद सँ ईर्ष्या, दुश्मनी,
निन्दा आ दोसर लोक सभ पर अधलाह
सन्देह होमऽ लगैत अछि, 5और ओहन
लोक सभक बीच हरदम झगड़ा होमऽ
लगैत छैक, जकर सभक बुद्धि भ्रष्ट भऽ
गेल छैक, जे सभ सत्य सँ वंचित भऽ गेल
अछि आ जे सभ भक्ति कयनाइ केँ लाभ
कमयबाक साधन मानैत अछि।

6 भक्ति सँ अवश्य पैघ लाभ होइत
अछि, मुदा तकरे, जे अपन स्थिति सँ

5:18 लूका 10.7

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT

सन्तुष्ट रहैत अछि। 7किएक तँ अपना सभ
एहि संसार मे ने किछु लऽ कऽ आयल छी
आ ने एतऽ सँ किछु लऽ कऽ जायब। 8तेँ
जँ अपना सभ केँ भोजन आ वस्त्र अछि तँ
ताही सँ सन्तुष्ट रही। 9मुदा जे केओ धन
जमा करऽ चाहैत अछि, से प्रलोभन मे
पड़ि जाइत अछि और एहन मूर्खतापूर्ण आ
हानिकारक लालसाक जाल मे फँसि जाइत
अछि जे लोक सभ केँ पतन आ विनाशक
खधिया मे खसा दैत छैक। 10कारण,
धनक लोभ सभ प्रकारक अधलाह बातक
जड़ि अछि। एही लोभ मे पड़ि कऽ कतेको
लोक सत्यक बाट सँ भटकि कऽ अपन
विश्वास त्यागि देने अछि आ अपन मोन केँ
विभिन्न दुःख-कष्ट सँ बेधि लेने अछि।

तिमुथियुसक लेल अन्तिम निर्देश

11 मुदा यौ परमेश्वरक भक्त, अहाँ
एहि सभ बात सँ दूर भागू आ धार्मिकता,
भक्ति, विश्वास, प्रेम, धैर्य आ नम्रताक
साधना मे लागू। 12विश्वासक नीक
लड़ाइ मे लागल रहू, और ओहि अनन्त
जीवन केँ पकड़ने रहू जे जीवन प्राप्त
करबाक लेल अहाँ बजाओल गेलहुँ आ
जकरा विषय मे अहाँ बहुतो लोकक
समक्ष नीक गवाही देलहुँ।

13 परमेश्वर केँ, जे सभक जीवनदाता
छथि, और मसीह यीशु केँ, जे राज्यपाल
पिलातुसक समक्ष सत्यक नीक गवाही
देलनि, साक्षी राखि कऽ हम अहाँ केँ
आज्ञा दैत छी जे, 14जा धरि अपना
सभक प्रभु यीशु मसीह फेर नहि आबि
जयताह, ता धरि निष्कलंक और निर्दोष
रहि कऽ अहाँ केँ जे जिम्मेवारी देल गेल
अछि तकरा पूरा करू। 15प्रभु यीशु मसीह
केँ वैह उचित समय पर प्रगट करथिन
जे परमधन्य परमेश्वर और एकमात्र
शासक छथि। ओ राजा सभक राजा आ
प्रभु सभक प्रभु छथि। 16ओ अमरताक
एकमात्र स्रोत छथि और ओहन इजोत मे
वास करैत छथि जकरा लग मे केओ जा
नहि सकैत अछि। हुनका कोनो मनुष्य
ने कहियो देखने छनि आ ने देखि सकैत
छनि। ओही परम परमेश्वरक सम्मान और
सामर्थ्य अनन्त काल धरि रहनि। आमीन।

17 एहि वर्तमान संसारक चीज-वस्तुक
दृष्टिकोण सँ जे सभ धनिक अछि, तकरा
सभ केँ आज्ञा दिऔक जे ओ सभ अहंकारी
नहि बनय। ओ सभ धन-सम्पत्ति पर नहि,
जे जल्दी सँ समाप्त होइत अछि, बल्कि
परमेश्वर पर भरोसा राखय, जे अपना
सभ केँ आनन्दित रहबाक लेल सभ वस्तु
पर्याप्त मात्रा मे दैत छथि। 18ओ सभ
नीक काज करैत रहय, भलाइक काज
सभ करऽ मे धनिक बनय, कंजूस नहि
रहय, और दोसराक सहायता करबाक
लेल सदिखन तत्पर रहय। 19एहि तरहेँ
ओ सभ अपना लेल एहन पूजी लगाओत
जे भविष्यक एक उत्तम आधार रहतैक,
जकरा द्वारा ओ सभ ओ जीवन प्राप्त
करत जे वास्तविक जीवन अछि।

20 यौ तिमुथियुस, अहाँक जिम्मा
मे जे देल गेल अछि तकर रक्षा करू।
परमेश्वर केँ अपमानित करऽ वला
निरर्थक बकवाद, और सत्यक विरोधी
“ज्ञान”क शिक्षा, जे ज्ञान तँ कहबैत
अछि मुदा अछि नहि, ताहि सँ दूर रहू।
21किएक तँ कतेको लोक एहि “ज्ञान” केँ
स्वीकार कऽ विश्वासक मार्ग सँ भटकि
गेल अछि।

अहाँ सभ पर परमेश्वरक कृपा बनल
रहओ।

Message of Life (The New Testament - Maithili) © 2010 The Bible Society of India and WBT